Education and Modernization in India: A Sociological Study

Dr. Rajesh Kumar Chaudhary

भारत में शिक्षा एवं आधुनिकीकरणः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 राजेश कुमार चौधरी
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग,
कुँवर सिंह कॉलेज, लहेरियासराय, दरभंगा

सारः

समकालीन शिक्षा, जो विभिन्न रूपों में आधुनिकीकरण का एक एजेंट है, पश्चिमी मूल का भी है। परंपरागत रूप से, शिक्षा की सामग्री गूढ़ और आध्यात्मिक थी; इसका संचार उच्च वर्गों या दो बार पैदा होने वाली जातियों 'तक सीमित था और इसके पेशेवर संगठन की संरचना वंशानुगत और बंद थी। शिक्षक और सीखनेवाले दोनों की भूमिकाएँ गुणात्मक रूप से अमूर्त थीं। आधुनिक शिक्षा में मौलिक रूप से अलग अभिविन्यास और संगठन है। इसकी सामग्री उदार और गूढ़ है, और यह आधुनिक वैज्ञानिक विश्व–दृष्टिकोण में डूबी हुई है। स्वतंत्रता, समानता, मानवतावाद और हठधर्मिता में विश्वास से इनकार ऐसे विषय हैं, जिनमें एक आधुनिक शिक्षा शामिल होनी चाहिए। इस पत्र के माध्यम से भारत में शिक्षा एवं आधुनिकीकरण पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य–शब्दः *भारत में शिक्षा; आधुनिकीकरण; विशेषताएं; कमियां; सामाजिक परिवर्तन।*

परिचय

शिक्षा आज आधुनिक औद्योगिक समाज की एक बुनियादी जरूरत बन गई है। इसे सामाजिक नियंत्रण के एक उपकरण की तुलना में सामाजिक परिवर्तन का एक एजेंट माना जाता है। दुनिया के सभी देश शिक्षा पर भारी मात्रा में पैसा लगा रहे हैं। सभी देश शिक्षा पर ज्यादा पैसा लगाते हैं क्योंकि शिक्षा से बहुत फर्क पड़ता है। यदि कोई देश भविष्य में शिक्षा में निवेश नहीं कर रहा है तो यह उसके लिए हानिकारक होगा क्योंकि शिक्षा के बिना देश की अगली पीढ़ी एक अच्छा जीवन जीने में सक्षम नहीं है शिक्षा, आधुनिकीकरण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग में उन्नति सामान्य रूप से एक साथ है। औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा आज एक परम आवश्यकता बन गई है। शिक्षा केवल पढ़ने और लिखने और सरल गणना करने के लिए उपयोगी नहीं है, बल्कि जीवन जीने के लिए पैसे कमाने के लिए भी उपयोगी है। वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा भी उपलब्ध है। भारत में कुछ शिक्षा वेबसाइट हैं जो भारत में ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करती हैं।

नौकरी जो आज मिलती है वह उसकी शिक्षा पर निर्भर करती है। जॉब प्रोफाइल में शिक्षा बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। आधुनिक समाज अपने आप को बदल रहा है और इसे एक साथ चलाने के लिए पर्याप्त रूप से शिक्षित होना चाहिए। इन दिनों दूरस्थ शिक्षा भी बढ़ रही है। आधुनिक शिक्षा में पाठ्यक्रम में आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर पुस्तकों का भण्डार शामिल है। कला और इतिहास की शिक्षा भी महत्वपूर्ण है। आधुनिक शिक्षा को इसमें हमारे पिछले इतिहास और संस्कृति को भी शामिल करना चाहिए। हमारी संस्कृति और विरासत भी महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें आधुनिक शिक्षा में अपने

इतिहास और कला को पर्याप्त स्थान देने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रभाव के कारण हमारे अतीत के कई मूल्यों ने अपना पिछला महत्व खो दिया है। इन मूल्यों को स्वीकार करने के लिए युवा पीढ़ी के लोगों द्वारा कोई प्रयास नहीं किया गया है।

वर्तमान में विज्ञान और प्रौद्योगिकी बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। आधुनिक शिक्षा ने अपना विकास किया है। प्रौद्योगिकी के अनियंत्रित विकास और विज्ञान में दिशाहीन विकास ने आज कई दुष्प्रभाव भी पैदा किए हैं। इसलिए हमें आधुनिक विज्ञान और हमारी कला के बीच संतुलन बनाना चाहिए।

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गई थी। इसकी ऐतिहासिक जगहें हैंः 1835 की मैकाले की नीति, अंग्रेजी के माध्यम से यूरोपीय सीखने को बढ़ावा देने के लिए, 1854 में सर चार्ल्स उड का डिस्पैच, जिसने पहली बार निजी और मिशनरी मदद के साथ बड़े पैमाने पर शिक्षा की आवश्यकता को मान्यता दी और चुनी हुई शिक्षा की नीति को छोड़ दिया। अंत में 1882 का पहला भारतीय शिक्षा आयोग जिसने शिक्षा के विस्तार में निजी भारतीय एजेंसियों की पहल की सिफारिश की। धीरे–धीरे, भारत में शैक्षिक संगठन की एक व्यापक संरचना उभरी, जिसे मोटे तौर पर तीन समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः पहला, प्राथमिक– शाब्दिक शिक्षा (अंग्रेजी मिशनरी स्कूलों के अपवाद के साथ); दूसरा, हाई स्कूल और माध्यमिक स्कूल शिक्षा और तीसरा, कॉलेज और विश्वविद्यालय शिक्षा। विज्ञान और यूरोपीय साहित्य का शिक्षण कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में किया गया था, जिनमें से कुछ का उपयोग करना था; लेकिन प्राथमिक स्तर पर सामूहिक शिक्षा इस मुख्य धारा से अलग–थलग रही। मैकाले के समय से शुरू हुई शिक्षा की संरचना में यह अंतराल अभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है।

शिक्षा के माध्यम से आधुनिकीकरण इस प्रकार भारत में शुरू से ही कॉलेज और विश्वविद्यालय शिक्षित युवाओं और अभिजात वर्ग की उप–संस्कृति तक ही सीमित रहा है और यह कभी भी एक व्यापक घटना नहीं बन पाया। आधुनिकीकरण में शिक्षा के महत्व का तीन क्षेत्रों में विश्लेषण किया जा सकता हैः पहला, इस शिक्षा की सांस्कृतिक सामग्री, दूसरा, इसकी संगठनात्मक संरचना और तीसरा, इसकी वृद्धि की दर। नई शिक्षा की सामग्री निस्संदेह प्रकृति में आधुनिकीकरण और उदार थी। नई शिक्षा की श्रेणीबद्ध संरचना वर्तमान और भविष्य के लिए उन्मुख थी। पाठ्यक्रम में इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र आदि जैसे विषयों पर छात्रों का ध्यान सामाजिक और भौतिक वास्तविकताओं और समकालीनता और मानवशास्त्र के दृष्टिकोण पर केंद्रित करने के लिए एक सूक्ष्म अभिविन्यास था। इसने पारंपरिक दृष्टिकोण और मूल्यों की प्रणाली से एक बड़ा ब्रेक चिह्नित किया।

आधुनिकीकरण का नारा अब दुनिया भर में गूंज रहा है। यद्यपि वर्तमान साहित्य में और भाषण में दोनों का अक्सर उपयोग किया जाता है, लेकिन शब्द 'आधुनिकीकरण' ने अलग–अलग अर्थ हासिल कर लिए हैं।

अर्थशास्त्री इस शब्द का उपयोग आर्थिक विकास के लिए एक अन्य शब्द के रूप में करते हैं, जो कि ज्यादातर प्राकृतिक संसाधनों के नियंत्रण के लिए प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

राजनीतिक वैज्ञानिक आधुनिकीकरण को सरकारी निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। वे रुचि रखते हैं कि कैसे सरकारें परिवर्तन को नया करने और सामाजिक संघर्ष का सामना करने की क्षमता बढ़ाती हैं।

मनोवैज्ञानिक आधुनिकता के लिए आवश्यक आत्मनिर्भरता और उपलब्धि प्रेरणा पर जोर देंगे।

आम आदमी के लिए औद्योगीकरण और स्वचालन आधुनिकीकरण का प्रतीक है। मशीन में, वह देखता है, एक तरफ, उत्पादन में वृद्धि हुई जिससे बेहतर आराम और उच्च जीवन स्तर मिला और दूसरी ओर, विज्ञान ने अंधविश्वास को विस्थापित किया।

शिक्षा में भी आधुनिकीकरण का अर्थ कई मायने में है। एक शिक्षाविद् के अनुसार आधुनिकीकरण का अर्थ है शिक्षा का प्रसार करना, शिक्षित और कुशल नागरिकों का उत्पादन करना और पर्याप्त और

सक्षम बुद्धिजीवियों को प्रशिक्षित करना। दूसरे के लिए यह शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अधिक शिक्षण सहायक सामग्री का अर्थ है। फिर भी तीसरा इसे पश्चिमी शैक्षिक प्रणाली के अंतर्गत इस तरह से देखेगा। शिक्षा में आधुनिकीकरण के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण का मतलब न केवल शिक्षा के उद्देश्य और प्रक्रियाओं के लिए बल्कि इसके संपूर्ण प्रोग्रामर की समग्रता के लिए एक नया दृष्टिकोण होगा ताकि इसे राष्ट्रीय विकास, राष्ट्रीय आवश्यकताओं और राष्ट्रीय आकांक्षाओं से संबंधित किया जा सके।

भारत के आधुनिकीकरण में शिक्षा की भूमिका:

1. शिक्षा और उत्पादन में वृद्धि
2. शिक्षा और शैक्षणिक अवसर की बराबरी
3. भावनात्मक और राष्ट्रीय एकता की शिक्षा और संवर्धन
4. समाज के एक समाजवादी पैटर्न की शिक्षा और स्थापना
5. लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए शिक्षा
6. शिक्षा और धर्मनिरपेक्षता
7. अंतर्राष्ट्रीय समझ के लिए शिक्षा
8. वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच शिक्षा और संश्लेषण।

भारत के लिए भविष्य शिक्षा नीति

स्वतंत्रता के बाद से, शैक्षिक प्रणाली में सुधार के लिए कई उपाय किए गए हैं। इन उपायों को तीन प्रमुखों में बांटा जा सकता है, अर्थात।

(i) समानता सुधार,

(ii) गुणवत्ता सुधार, और (iii) प्रशासनिक आसानी के लिए सुधार।

इन सुधारों की प्रभावशीलता पर अध्ययन के लिए आगे इनमें से प्रत्येक को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है: (i) वर्ग–उन्मुख सुधार, और (ii) जन–उन्मुख सुधार, निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचे हैं।

1.समानता सुधारों का मतलब जनता के लिए निकला है, और बड़े पैमाने पर, वर्गों के लिए किए गए समानता सुधारों की तुलना में कम सफल रहा है। इस प्रकार, शिक्षा के उच्च स्तर के समानता सुधार शिक्षा के निचले स्तरों की तुलना में अधिक सफल पाए गए हैं।

2.गुणवत्ता सुधारों के मामले में भी, वर्ग–उन्मुख सुधारों की तुलना में बड़े पैमाने पर उन्मुख सुधार कम सफल होते हैं।

3.उन्नत वातावरण में, शैक्षिक सुधारों ने सफलता की एक डिग्री हासिल की है, लेकिन कम–विकसित और सामाजिक–आर्थिक रूप से कमजोर वातावरण में, शैक्षिक सुधार कम सफल रहे हैं।

4.यह इस प्रकार है कि वर्गों के लिए किए गए सुधार कम समय की अवधि में सफल होते प्रतीत होते हैं।

5.अधिकांश शैक्षिक सुधारों के मामले में, सरकार द्वारा जन भागीदारी के साथ प्राथमिक पहल बहुत सीमित थी। हितधारकों, दोनों लक्षित समूह और अन्य, ने बस इस पहल या सरकार की ओर से नेतृत्व का पालन किया। यह उपायों के प्रभाव को कम करने में योगदान देता है। '

6.शैक्षिक परिवर्तन के लिए वैश्विक दृष्टिकोण ने नीति–निर्माताओं द्वारा विशिष्ट लक्ष्य समूहों के लिए विशिष्ट उपायों की तुलना में अधिक ध्यान दिया है।

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में कमियां

भारत में प्रगति के बावजूद, शिक्षा क्षेत्र में कई कमियां हैं। मुख्य कमियां इस प्रकार हैं:

कम सुविधाएं: बड़े विस्तार के बावजूद, शिक्षा सुविधाएं अभी भी देश की जरूरतों से कम हैं। शिक्षा में अभी भी देश की सीमित आबादी शामिल है। देश में अभी भी 46 प्रतिशत निरक्षर महिलाएं और 24 प्रतिशत निरक्षर पुरुष हैं। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों में निरक्षरता अभी भी बहुत

अधिक है। ड्रॉपआउट दर बहुत अधिक है। 60 फीसदी बच्चे माध्यमिक स्कूलों में नहीं जाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में 66 प्रतिशत और कोरिया में 38 प्रतिशत की तुलना में केवल 2.5 प्रतिशत भारतीय आबादी कॉलेजों और विश्वविद्यालय में भाग लेती है।

द्वितीय, *अनौपचारिकताः* शिक्षा के अवसर और लाभ अत्यधिक असमान हैं। उदाहरण के लिए, महिलाओं की शिक्षा पुरुषों की तुलना में बहुत कम है।

तृतीय, *गुणवत्ता* में इसकी सामग्री के संदर्भ में शिक्षा की गुणवत्ता कम है। इसके अलावा, शिक्षा की पाठ्यक्रम सामग्री देश की आवश्यकताओं के लिए कम प्रासंगिक है। उदाहरण के लिए, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की तुलना में सामान्य शिक्षा पर बहुत अधिक जोर है।

चतुर्थ, *शिक्षा प्रणाली* भी विभिन्न असंतुलन से ग्रस्त है। उदाहरण के लिए, संसाधनों का अधिक अनुपात प्राथमिक शिक्षा और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा को आम लोगों के लिए आवंटित किया जाता है। इसी तरह, जबकि सामान्य डिग्री वाले शिक्षित व्यक्तियों में बड़ी बेरोजगारी है, प्रासंगिक तकनीकी शिक्षा वाले लोग कम आपूर्ति में हैं। इसी तरह से, शिक्षा प्रणाली शहरी क्षेत्रों के पक्ष में और ग्रामीण क्षेत्रों के खिलाफ पक्षपाती है।

पंचम, *सामान्य क्षेत्र में कम स्तरः* शिक्षा की पहुंच में असमानता का एक उच्च स्तर है। शहरी आबादी की तुलना में ग्रामीण आबादी के लिए 'पहुँच स्तर' काफी कम है।

षष्ठ, *निजीकरणः* शिक्षा निजीकरण की दिशा में बढ़ रहा है। यह शिक्षा को महंगा बनाता है। उपरोक्त कमजोरियों के मद्देनजर, शिक्षा के क्षेत्र में भारत का रिकॉर्ड लाजिमी है।

समाजिक परिवर्तन

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण का प्रमुख प्रस्तावक माना जाता है। सामाजिक गतिशीलता पर आधुनिक शिक्षा के बीयरिंगों का गोल्डथ्रोप द्वारा बहुत विस्तार से अध्ययन किया गया है। औद्योगिक रूप से विकसित समाजों के आंकड़ों को देखते हुए, उन्हें पता चलता है कि 60 प्रतिशत श्रमिक वर्ग के बच्चों को पर्यवेक्षी और अर्ध–कुशल व्यावसायिक पदों पर लाने के लिए शिक्षा ने कैसे योगदान दिया है जबकि 20 कामकाजी वर्ग के बच्चों का प्रतिशत अपने माता–पिता के कब्जे में है और 10 प्रतिशत ऊर्ध्वाधर गतिशीलता के लिए जाते हैं। यह देखा गया है कि जापान में माता–पिता और बच्चों का व्यवसाय काफी हद तक समान है और अमेरिका में बहुत अलग है। उनका मानना है कि भिन्नता जापानी समाज में पारंपरिक परिवार प्रणाली, जापानी कार्य संस्कृति की निरंतरता का परिणाम है जो अमेरिका में पारिवारिक संरचना और कार्य संस्कृति से अलग है। हालाँकि इन सभी विकसित समाजों में शिक्षा ने कौशल, ज्ञान और विशेषज्ञता के संचरण के लिए योगदान दिया है, जो समान रूप से चरित्र में अस्थायी के रूप में समानता के आधार पर काम करने वाले अपने सदस्यों के लिए है। इस प्रकार शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन की गतिशीलता और आधुनिकीकरण का प्रमुख स्रोत माना गया है। बॉर्डियू ने इस तर्क का खंडन किया। सामाजिक और सांस्कृतिक प्रजनन के अपने सिद्धांत में वह दावा करते हैं कि शिक्षा समानता का प्रचार करती है लेकिन पदानुक्रम और असमानता के सुदृढीकरण का अभ्यास करती है। उन्हें पता चलता है कि स्कूल में सफलता सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रतीकात्मक लाभ से तय नहीं होती है जो बच्चों को अन्य अनजान बच्चों से अधिक है। पूंजी के इन तीन रूपों पर नियंत्रण रखने वाले उच्च वर्ग के बच्चे अपनी पैतृक सफलता को अपनी व्यक्तिगत सफलता मानते हैं और यह सफलता स्कूल द्वारा वैध है और उन्हें उच्च लाभदायक व्यवसायों में प्रवेश करने के लिए अच्छे ग्रेड या प्रमाण पत्र प्रदान करता है। शिक्षा की गतिशीलता के लिए कोई गुंजाइश नहीं है और बड़े पैमाने पर लोगों को शिक्षा दी जाती है, लेकिन नौकरी के बाजार के लिए महत्वपूर्ण विशेष शिक्षा उच्च वर्ग द्वारा एकाधिकार है। शिक्षा क्षैतिज गतिशीलता के लिए योगदान देती है, लेकिन यह उनके वर्चस्व के लिए उच्च वर्ग के पक्ष में अनन्य पदों को मान्य करती है। यदि उच्च वर्ग के समाज द्वारा शुरू किए गए सभी निवारक उपायों के बावजूद निम्न वर्ग का बच्चा जीवन में सफल हो जाता है, तो वह बच्चे की इस सफलता का

श्रेय लेता है और उसकी वकालत करता है कि कैसे उसकी शिक्षा प्रणाली, राजनीतिक नेतृत्व और आदर्शवादी मूल्य समानता के सिद्धांतों के लिए प्रतिबद्ध हैं । बोर्डीओ के तर्क का समर्थन बॉवेल्स और गिंटिस ने किया है जिन्होंने इस बात की वकालत की कि पूंजीवादी अमेरिका के स्कूल समतावादी की तुलना में वर्ग आधारित हैं। यह गतिशीलता के लिए कम से कम अवसर प्रदान करता है। निम्न वर्ग से संबंधित बच्चे कम विशेषाधिकार प्राप्त स्कूलों में आते हैं और बाद में कम वेतन वाली नौकरियों में आते हैं। समाजवादी समाजों में समान शिक्षा बच्चे को अपनी पसंद के व्यवसाय में आने का अवसर प्रदान नहीं करती है। उसका भविष्य राज्य की आवश्यकता से बहुत अधिक निर्धारित है। इस प्रकार शिक्षा समाजवाद में स्वतंत्रता और आत्म–प्राप्ति को बढ़ावा देने में बहुत व्यस्त नहीं है। बारबरा मिलर के अनुसार, रूस में अधिकांश महिलाएं लॉरी ड्राइविंग के लिए गई हैं, इस तथ्य के कारण नहीं कि वे इस वोकेशन को चाहती थीं, बल्कि इस तथ्य के कारण कि यह एकमात्र वोकेशन था जो उनके लिए छोड़ दिया गया था या उनके लिए आसानी से उपलब्ध था। इस प्रकार सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा की भूमिका वास्तव में संदिग्ध है। भारत में 'इंडियन पब्लिक स्कूल' में विक्टर डिसूजा के अनुसार, भारतीय पब्लिक स्कूल उच्च वर्ग की जरूरतों को पूरा करता है। महंगे होने वाले ये स्कूल गरीबों की पहुंच से परे हैं। अमीरों और गरीबों को दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता बहुत अलग है, वे नौकरी के बाजार में अलग तरह से आते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा ने बिना किसी गतिशीलता या प्रतिबंधात्मक गतिशीलता के लिए योगदान दिया है। सूर्यनारायण को पता चलता है कि भारत में सहायता प्राप्त स्कूल, अर्ध–सहायता प्राप्त स्कूल, मिशनरी स्कूल, आश्रम स्कूल दृष्टिकोणों की किस्मों को प्रकट करते हैं और वे सामाजिक स्तर के विभिन्न वर्गों से अपनी सांस्कृतिक और व्यावसायिक जरूरतों के लिए अपील करते हैं। लेकिन वे शैक्षिक रूप से जनता के लिए समर्थन के आधार का विस्तार करने के लिए एक आम एजेंडे के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन गुणवत्ता की शिक्षा विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग को जाती है और इसके लिए एक गवाही सरकारी पदों में आदिवासी अधिकारियों के नगण्य प्रतिशत का प्रतिनिधित्व है, जबकि उनके लिए आरक्षण का प्रावधान है। समानता को बढ़ावा देने की तुलना में भारत में शिक्षा पदानुक्रम को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण है। आंद्रे बेटिले अपने लेख में वकालत करते हैं कि यह कैसे समानता या आर्थिक हित का सिद्धांत नहीं है या गतिशीलता की खोज नहीं है जो लोगों को स्कूलों में प्रवेश कराती है बल्कि स्कूल में प्रवेश दिलाती है और विद्यालय में सफलता को परिवार, रिश्तेदारी, धर्म या अन्य सांस्कृतिक चर द्वारा परिभाषित किया जाता है। गतिशीलता को शामिल करने में शिक्षा की भूमिका सार्वभौमिक रूप से समान नहीं हो सकती है। प्रत्येक समाज में विभिन्न प्रकार की मजबूरियां, संस्थागत स्थिति मूल्य प्रणाली यह निर्धारित करेगी कि किस हद तक, किस रूप में शिक्षा ने गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन के लिए सफलतापूर्वक योगदान दिया है।

पूंजी के इन तीन रूपों पर नियंत्रण रखने वाले उच्च वर्ग के बच्चे अपनी पैतृक सफलता को अपनी व्यक्तिगत सफलता मानते हैं और यह सफलता स्कूल द्वारा वैध है और उन्हें उच्च लाभदायक व्यवसायों में प्रवेश करने के लिए अच्छे ग्रेड या प्रमाण पत्र प्रदान करता है। शिक्षा की गतिशीलता के लिए कोई गुंजाइश नहीं है और बड़े पैमाने पर लोगों को शिक्षा दी जाती है, लेकिन नौकरी के बाजार के लिए महत्वपूर्ण विशेष शिक्षा उच्च वर्ग द्वारा एकाधिकार है। शिक्षा क्षैतिज गतिशीलता के लिए योगदान देती है, लेकिन यह उनके वर्चस्व के लिए उच्च वर्ग के पक्ष में अनन्य पदों को मान्य करती है। यदि उच्च वर्ग के समाज द्वारा शुरू किए गए सभी निवारक उपायों के बावजूद निम्न वर्ग का बच्चा जीवन में सफल हो जाता है, तो वह बच्चे की इस सफलता का श्रेय लेता है और उसकी वकालत करता है कि कैसे उसकी शिक्षा प्रणाली, राजनीतिक नेतृत्व और आदर्शवादी मूल्य समानता के सिद्धांतों के लिए प्रतिबद्ध हैं । बोर्डीओ के तर्क का समर्थन बॉवेल्स और गिंटिस ने किया है जिन्होंने इस बात की वकालत की कि पूंजीवादी अमेरिका के स्कूल समतावादी की तुलना में वर्ग आधारित हैं। यह

गतिशीलता के लिए कम से कम अवसर प्रदान करता है। निम्न वर्ग से संबंधित बच्चे कम विशेषाधिकार प्राप्त स्कूलों में आते हैं और बाद में कम वेतन वाली नौकरियों में आते हैं। समाजवादी समाजों में समान शिक्षा बच्चे को अपनी पसंद के व्यवसाय में आने का अवसर प्रदान नहीं करती है। उसका भविष्य राज्य की आवश्यकता से बहुत अधिक निर्धारित है। इस प्रकार शिक्षा समाजवाद में स्वतंत्रता और आत्म–प्राप्ति को बढ़ावा देने में बहुत व्यस्त नहीं है। बारबरा मिलर के अनुसार, रूस में अधिकांश महिलाएं लॉरी ड्राइविंग के लिए गई हैं, इस तथ्य के कारण नहीं कि वे इस वोकेशन को चाहती थीं, बल्कि इस तथ्य के कारण कि यह एकमात्र वोकेशन था जो उनके लिए छोड़ दिया गया था या उनके लिए आसानी से उपलब्ध था। इस प्रकार सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा की भूमिका वास्तव में संदिग्ध है। भारत में 'इंडियन पब्लिक स्कूल' में विक्टर डिसूजा के अनुसार, भारतीय पब्लिक स्कूल उच्च वर्ग की जरूरतों को पूरा करता है। महंगे होने वाले ये स्कूल गरीबों की पहुंच से परे हैं। अमीरों और गरीबों को दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता बहुत अलग है, वे नौकरी के बाजार में अलग तरह से आते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा ने बिना किसी गतिशीलता या प्रतिबंधात्मक गतिशीलता के लिए योगदान दिया है। सूर्यनारायण को पता चलता है कि भारत में सहायता प्राप्त स्कूल, अर्ध–सहायता प्राप्त स्कूल, मिशनरी स्कूल, आश्रम स्कूल दृष्टिकोणों की किस्मों को प्रकट करते हैं और वे सामाजिक स्तर के विभिन्न वर्गों से अपनी सांस्कृतिक और व्यावसायिक जरूरतों के लिए अपील करते हैं। लेकिन वे शैक्षिक रूप से जनता के लिए समर्थन के आधार का विस्तार करने के लिए एक आम एजेंडे के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन गुणवत्ता की शिक्षा विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग को जाती है और इसके लिए एक गवाही सरकारी पदों में आदिवासी अधिकारियों के नगण्य प्रतिशत का प्रतिनिधित्व है, जबकि उनके लिए आरक्षण का प्रावधान है। समानता को बढ़ावा देने की तुलना में भारत में शिक्षा पदानुक्रम को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण है। आंद्रे बेटिले अपने लेख में वकालत करते हैं कि यह कैसे समानता या आर्थिक हित का सिद्धांत नहीं है या गतिशीलता की खोज नहीं है जो लोगों को स्कूलों में प्रवेश कराती है बल्कि स्कूल में प्रवेश दिलाती है और विद्यालय में सफलता को परिवार, रिश्तेदारी, धर्म या अन्य सांस्कृतिक चर द्वारा परिभाषित किया जाता है। गतिशीलता को शामिल करने में शिक्षा की भूमिका सार्वभौमिक रूप से समान नहीं हो सकती है। प्रत्येक समाज में विभिन्न प्रकार की मजबूरियां, संस्थागत स्थिति मूल्य प्रणाली यह निर्धारित करेगी कि किस हद तक, किस रूप में शिक्षा ने गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन के लिए सफलतापूर्वक योगदान दिया है।

निष्कर्ष

विज्ञान के वर्तमान युग का एक महान सबक यह है कि दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के साथ समृद्धि लाने की इच्छा किसी भी राष्ट्र की पहुंच के भीतर है, जिसमें एक स्थिर और प्रगतिशील सरकार है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आने वाले वर्षों में भारत का व्यापार और वाणिज्य बढ़ेगा; अधिक शिक्षा होगी, बेहतर स्वास्थ्य और जीवन स्तर का उचित मानक उपलब्ध होगा। लेकिन भारत का योगदान इन भौतिक लाभों से कहीं अधिक होना चाहिए।

संदर्भ

- चहलोनिया, पालराजिंदर और बावा एस. के. (2002) आधुनिकीकरण का मनोवृत्ति पर प्रभाव, भारतीय मनोविज्ञान और शिक्षा (आईजेपीई) जर्नल, 2002, खंड 3, नंबर 1: पृ. 45–50।
- गोयल, एस.पी. और गुप्ता एम. (2009), आक्रामकता के स्तर पर आधुनिकीकरण का प्रभाव। एशियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड एजुकेशन अवस.42, छव.1–2, 2009: पृ. 12–15।
- चोपड़ा, कमला (1988), मूवीज एंड मॉडर्नाइजेशन इन इंडिया साइको–लिंगू, 1988, 18 (2), पृ. 107–116।

- मनिता, एम.पी., और देहलदीप सिंह (2009), पर्यावरण जागरूकता और आधुनिकीकरण, साइको–लिंगू 2009, 39 (2): पृ. 178–181।
- श्रीवास्तव आर. (2009), आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण पर माता–पिता का आधिपत्य। इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, अवस.72, वर्ष 2009, पृ. 117–122।
- श्रीवास्तव रश्मि, (2006), आधुनिकता के दृष्टिकोण पर धर्म और जाति का प्रभाव। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन (IJPE), 2006, 37 (2): पृ. 168–172।